बाबा मुक्तानन्द की सिखावनी

३

नीलबिन्दु तुम्हारा अन्तरतम सत्य है, इसके साथ सम्पर्क स्थापित कर लेने में ही योग की परिपूर्णता है। कुछ काल तक स्थिर रहने के बाद नीलबिन्दु फट जाता है। तब इसका तेज सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में फैल जाता है और तुम इसे सर्वत्र देख सकते हो। उस तेज में तुम्हें अपने श्रीगुरु के दर्शन होते हैं। ऐसा होने पर ही तुम्हें एक सिद्धगुरु के माहात्म्य का ज्ञान होता है, क्योंकि तुम जान जाते हो कि उनका सच्चा निवास सदैव तुम्हारे अन्दर ही रहा है।

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, "Investigate the Inner Realms," Darshan magazine no. 77/78, [अगस्त / सितम्बर १९९३], *Science and Meditation,* पृष्ठ १९-२०।

© २०२३ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।